राजस्थान सरकार

जिला बूंदी
"पंच गौरव"

एक उपज - चावल

एक पर्यटन स्थल -
रामगढ विषधारी टाइगर रिजर्व

एक वनस्पति - धोंक

एक खेल - कबड्डी

एक उत्पाद - सेंड स्टोन

श्री भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

अक्षय गोदारा
जिला कलक्टर बूंदी

संदेश

बूंदी जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए बूंदी जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले के एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिए जाने हेतु पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। जिसके अन्तर्गत बूंदी जिले में पंच गौरव के रूप में, एक जिला-एक उत्पाद- सेंड स्टोन, एक जिला-एक उपज- चावल, एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति- धौंक, एक जिला एक खेल- कबड्डी, एक जिला-एक पर्यटन स्थल-रामगढ विषधारी टाइगर रिजर्व चिन्हित किए गए हैं।

जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु जिला पुस्तिका 2025 का प्रकाशन किया जा रहा है| आशा है कि यह प्रकाशन जिले की आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर जिले के सर्वांगीण विकास में उपयोगी सिद्ध होगा।

विषय-सूची

1.	प्रस्तावना	5
2.	कार्यक्रम के उद्देश्य	6
3.	पंच गौरव जिला समिति संरचना	7
4.	एक जिला एक उपज – चावल	8-11
5.	एक जिला एक उत्पाद- सेंड स्टोन	12-16
6.	एक जिला एक खेल- कबड्डी	17-18
7.	एक जिला एक पर्यटन स्थल- रामगढ विषधारीटाइगर रिजर्व	20-21
8.	एक जिला एक वनस्पति-धौंक	22-24

बूंदी चित्र शैली

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग-अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते है। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है।

पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिलें में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद है। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही है।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "**पंच-गौरव" कार्यक्रम** शुरू किया जा रहा है।

बूंदी जिले के लिए पंच गौरव के रूप में, जिला-एक उत्पाद-सेंड स्टोन, एक जिला-एक उपज-चावल, एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति-धौंक, एक जिला एक खेल-कबड्डी, एक जिला-एक पर्यटन स्थल- रामगढ विषधारी टाइगर रिजर्व चिन्हित किए गए हैं।

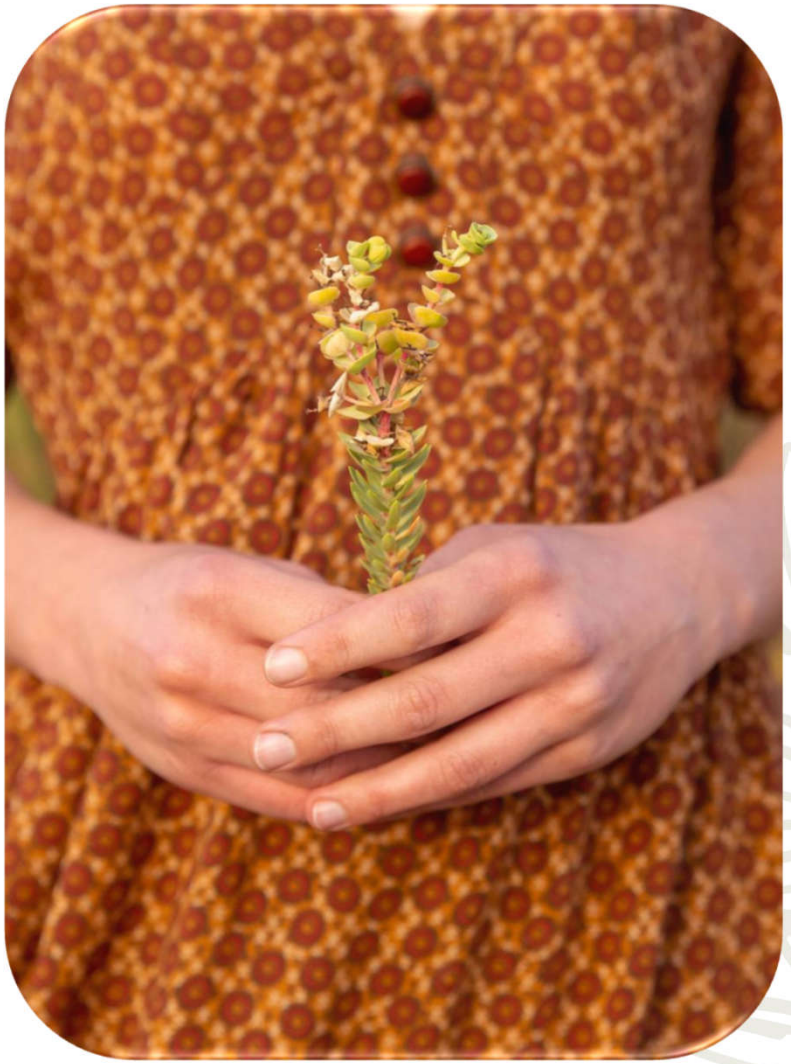

कार्यक्रम के उद्देश्य

राज्य सरकार की मंशानुरूप जिले के उत्पादों को व्यापक स्तर पर पहचान दिलाने के उद्देश्य से पंच गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। कार्यक्रम के तहत जिले के पांच प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिनमें एक जिला-एक उपज, एक जिला-एक उत्पाद, एक जिला-एक खेल, एक जिला-एक पर्यटन स्थल और एक जिला-एक प्रजाति शामिल हैं ।

जिले में पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन किया जाएगा। स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि की जाएगी। साथ ही स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोका जाएगा।

जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना, प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढावा देना, खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना तथा सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना कार्यक्रम के उद्देश्यों में शामिल है।

समिति का गठन और कार्य निर्धारण

जिले में विभागों के समन्वय एवं पंच गौरव संवर्धन एवं विकास के लिए एक विस्तृत कार्य योजना तैयार कर कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिला कलक्टर की अध्यक्षता में समिति गठित की गई है। इसमें जिला कलक्टर अध्यक्ष, उद्योग महाप्रबंधक, उपनिदेशक कृषि, उपनिदेशक उद्यानिकी, मंडल वन अधिकारी, जिला खेल अधिकारी, जिला पर्यटन अधिकारी, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, जिला कोषाधिकारी को सदस्य तथा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के उपनिदेशक सदस्य सचिव है।

जिला स्तरीय समिति जिला स्तर पर पंच गौरव के संबध में विवरणिका तैयार करने, पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन, कार्यक्रम के प्रभावी संचालन के लिए जिले की कार्य प्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार प्रसार की कार्य योजना तैयार करना तथा पंच गौरव जिला पुस्तिका तैयार करने का कार्य करेगी। समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

एक जिला एक उपज- चावल

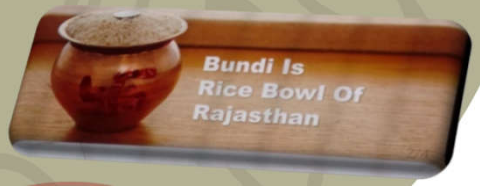

- चावल भारत की मुख्य खाद्यान्न फसल है। खरीफ की मुख्य फसलों में से एक है। चावल की खेती उत्तरी गंगा के मैदानों और दक्षिणी प्रायद्वीप पठारों दोनों में की जाती है। चावल का उत्पादन करने में भारत के उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उडीसा, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ, तमिलनाडू, बिहार अग्रणी राज्य है।
- चावल की खेती राजस्थान मुख्यतः गंगानगर, हनुमानगढ, बून्दी व कोटा जिलों में की जाती है।
- चावल की खेती मुख्य रुप से वर्षा जल क्षेत्रों में की जाती है। बून्दी जिला चावल के उत्पादन में अग्रणी जिला है, चावल बून्दी जिले की खरीफ सीजन की मुख्य फसल है, जिसका बुवाई क्षेत्रफल वर्ष 2024-25 में 99570 हैक्टयर है।
- बून्दी जिले में मुख्यतः बासमती चावल की बुवाई की जाती है। जिले का चावल मुख्यतः खाड़ी देशों, यूएसए, रशिया में निर्यात किया जा रहा है। चावल में मुख्य पोषक तत्वों का भण्डार है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट-75.80% , प्रोटीन 7 % ,(औराइजीन), वसा- 1-2 % पाई जाती है।

चावल की खेती

- **खेत का चुनाव व तैयारी-** चावल की बुवाई दो विधियों से होती है।
- **चावल की सीधी बुवाई**- चावल की सीधी बुवाई करने के लिये खेत की अच्छी तरह से जुताई कर खेत को तैयार किया जाता है। इस विधि में खेत को समतल करना अनिवार्य नही है।
- पौध तैयार कर चावल की पौध लगाने के लिये सर्वप्रथम खेत को समतल किया जाता है व 2-3 बार कल्टीवेटर व हैरो से जुताई कर खेत को तैयार कर लिया जाता है।
- **उन्नत किस्में-** माही सुगन्धा , पी.एच.बी.-71, पुसा सुगंन्धा 4 (पी-1121), पुसा 1192, पुसा सुंगन्धा (पी 2511), पुसा बासमली (1509)

बून्दी जिले में प्रचलित किस्में

- **पुसा सुगंन्धा 4 (पी-1121) एवं पुसा सुगंन्धा 5 (पी-1121)**-उक्त दोनों किस्में बासमती चावल की अधिक उत्पादन देने वाली किस्में है, जिनका दाना पतला, लम्बा, चमकीला एवं अत्यधिक खुशबु वाला है। यह किस्में 130-135 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इनका औसत उत्पादन 45-50 क्विंटल प्रति हैक्टयर है। यह किस्में विदेशों में निर्यात की जाती है। जिससे पूरे विश्व में राजस्थान राज्य व बून्दी जिले का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।
- **पुसा बासमती (1509)** - यह किस्म मध्यम ऊंचाई 100 -105 सेन्टीमीटर व 120-125 दिन में पक कर तैयार होने वाली किस्म है। औसत उपज 45-50 क्विंटल प्रति हैक्टयर है। दाना लम्बा, पतला बासमती गुणों से युक्त, वजनदार व खुशबुदार होता है। यह किस्म जीवाणु अंगमारी रोग व ब्लास्ट रोग तथा कीटों से मध्यम प्रतिरोधी है। कम समय में अधिक उत्पादन देने की वजह से यह किस्म बून्दी जिले में अधिक प्रचलित है। कम समय पर पककर तैयार होने से पानी व समय की बचत होती है। यह किस्म नर्सरी में पौध तैयार कर बुआई करने व सीधी बुआई करने के लिए उपयुक्त है।

बीज व नर्सरी तैयार करना- चावल की फसल की पौध तैयार करने के लिए नर्सरी की आवश्यकता पडती है। जिसके लिए 1:1 मिट्टी व गोबर की खाद मिलाकर जमीन से 15 सेन्टीमीटर ऊंची उठी हुई क्यारियां बनाए तथा क्यारियों में 6 किग्रा बीज प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिटकर 2-3 के लिए चावल की पुवाल से ढककर झारे से पानी देवे । बीज उगने के बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। 100 वर्ग मीटर में तैयार पौध एक हैक्टयर में लगाने हेतु पर्याप्त होती है व सीधी बुआई हेतु 30-40 किग्रा बीज प्रति हैक्टयर पर्याप्त होता है।

धान फसल में उर्वरक की मात्राऐं- नाइट्रोजन की मात्रा 120, फास्फोरस 60, पोटाश 30 किलो प्रति हैक्टयर पर्याप्त होता है। जिसमें 40 किग्रा नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा का बुआई के पूर्व प्रयोग करें। साथ ही 40 किग्रा नाइट्रोजन बुआई के 15-20 दिन बाद व शेष 40 किग्रा नाइट्रोजन बाली निकलने से पूर्व प्रयोग करना अधिक लाभप्रद रहता है।

सिंचाई-सीधी बुआई वाले चावल की फसल में 10-15 दिन के अन्तराल में सिंचाई कर पर्याप्त नमी बनाये रखनी चाहिए। नर्सरी तैयार कर पौध लगाने के लिए पहले खेत में पानी भरकर पडलींग की जाकर खेत तैयार किया जाता है। खेत में 2-2.5 इंच पानी रहने पर पौध की रोपाई की जाती है। साथ ही बालियां निकलने तक खेत में 2-2.5 इंच पानी भरा रहना चाहिए ताकि खरपतवार नहीं उगे और अधिक पैदावार मिल सकें।

कटाई

जब फसल पकने की अवस्था में आती है तब दाने पिले पडने लग जाये तब फसल को काटकर सुखाकर बण्डल बांधकर लोहे की जाली में झाडकर या मशीन द्वारा थ्रेसिंग कर दाने का अलग कर लिया जाता है। साफ कर भण्डारित व बैचने हेतु तैयार किया जाता है। चावल की फसल में औसत उपज लगभग 45-55 क्विंटल प्रति हेक्टयर की रहती है।

एक जिला एक उत्पाद
सेण्ड स्टोन

बूंदी, राजस्थान का एक ऐतिहासिक शहर है जो अपनी अनमोल धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें सबसे प्रमुख है यहाँ का बलुआ पत्थर, जो अपनी अद्वितीय गुणवत्ता, चमकीले रंगों, और दीर्घकालिक टिकाऊपन के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। यह पत्थर केवल एक निर्माण सामग्री नहीं है, बल्कि यह बूंदी की संस्कृति और परंपरा की एक अमूल्य धरोहर है। बूंदी का बलुआ पत्थर न केवल स्थानीय वास्तुकला में अहम भूमिका निभाता है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर भी पहचान मिली है।

भूवैज्ञानिक विशेषताएँ

बूंदी का बलुआ पत्थर लाखों वर्षों की प्राकृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम है। यह पत्थर मुख्यतः सिलिका, क्वार्ट्ज और अन्य खनिजों से बना होता है, जो इसे मजबूत और टिकाऊ बनाते हैं।

- रंग और बनावट- यह पत्थर प्राकृतिक रूप से विभिन्न रंगों में उपलब्ध है, जैसे लाल, भूरा, पीला और सफेद जो इसे सजावटी उपयोगों के लिए आदर्श बनाते हैं।
- मजबूती - इसकी कठोरता इसे मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने में सक्षम बनाती है।
- पर्यावरणीय लाभ- यह एक प्राकृतिक पत्थर है,जिसे जिम्मेदारी से खनन किया जाता है। इसका उपयोग पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है।

उपयोग और महत्व

बूंदी का बलुआ पत्थर बहुउपयोगी है और इसका महत्व न केवल पारंपरिक बल्कि आधुनिक निर्माण परियोजनाओं में भी देखा जा सकता है।

- पारंपरिक उपयोग - ऐतिहासिक किलों, महलों, मंदिरों और अन्य संरचनाओं में इसका इस्तेमाल।
- आधुनिक उपयोग - इस पत्थर का उपयोग घरों में फर्श और दीवारों के लिए गार्डन डेकोर और स्मारकों में किया जाता है।
- मूर्तिकला और सजावटी कार्य - इस पत्थर की कोमलता इसे मूर्तिकला के लिए उपयुक्त बनाती है। इसमें बनाए गए आर्ट पीस और मूर्तियाँ अद्वितीय सौंदर्य प्रदान करते हैं।

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

बूंदी में बलुआ पत्थर उद्योग ने स्थानीय शिल्पकारों और मजदूरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं।

- **स्थानीय शिल्प कौशल -** बूंदी के शिल्पकार अपने पारंपरिक कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं, जो पत्थरों को कला में बदलने की क्षमता रखते हैं।
- **आर्थिक योगदान -** इस उद्योग ने राजस्थान और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दिया है, विशेषकर निर्यात बाजार के माध्यम से।
- **सामाजिक प्रभाव -** यह उद्योग स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को सुधारने और उनके समुदाय को सशक्त बनाने में सहायक रहा है।

बूंदी बलुआ पत्थर का प्रचार और विपणन

बूंदी का बलुआ पत्थर केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित नहीं है; इसे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी पहचान मिली है।

- **वैश्विक स्तर पर प्रचार -** इसकी प्राकृतिक सुंदरता, टिकाऊपन, और बहु-उपयोगिता को उजागर करके इसे वैश्विक बाजारों में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- **स्थानीय संवर्धन -** इसे पारंपरिक और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रचारित किया जा सकता है, जैसे कि इसे बूंदी की कला और इतिहास से जोड़कर।
- **निर्यात संभावनाएँ -** इसकी मांग बढ़ाने के लिए इसे बड़े पैमाने पर निर्यात किया जा सकता है।

प्रेरणादायक चित्र और उदाहरण

बूंदी बलुआ पत्थर से बने प्रतिष्ठित स्थलों की तस्वीरें और उनकी अनूठी विशेषताएँ पाठकों को इस पत्थर के महत्व को समझने और इसे अपनाने के लिए प्रेरित करेंगी।

- **स्थानीय उदाहरण -** राजस्थान के प्रमुख महल और किले, जैसे बूंदी का गढ़ और कोटा के आस-पास के स्मारक।
- **आधुनिक उदाहरण -** ऐसे वास्तुशिल्प डिज़ाइन और आधुनिक घर, जिनमें इस पत्थर का उपयोग किया गया है।

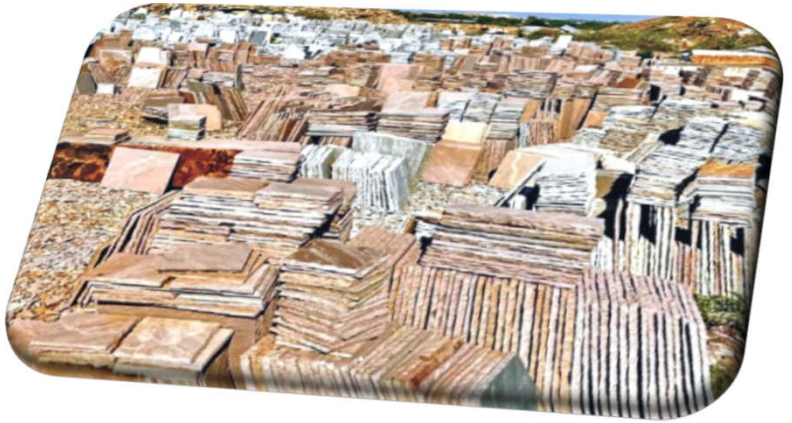

बूंदी जिले में सेंड स्टोन की विभिन्न किस्में

- अरावली ब्राउन
- चारकोल ग्रे
- राज ग्रीन
- वनिला वाईट
- बीज ग्रीन
- कंडला ग्रे
- पेंसिल लाईन
- बफ़्फ़
- ऑटम ब्राउन
- रवीना
- टू टोन

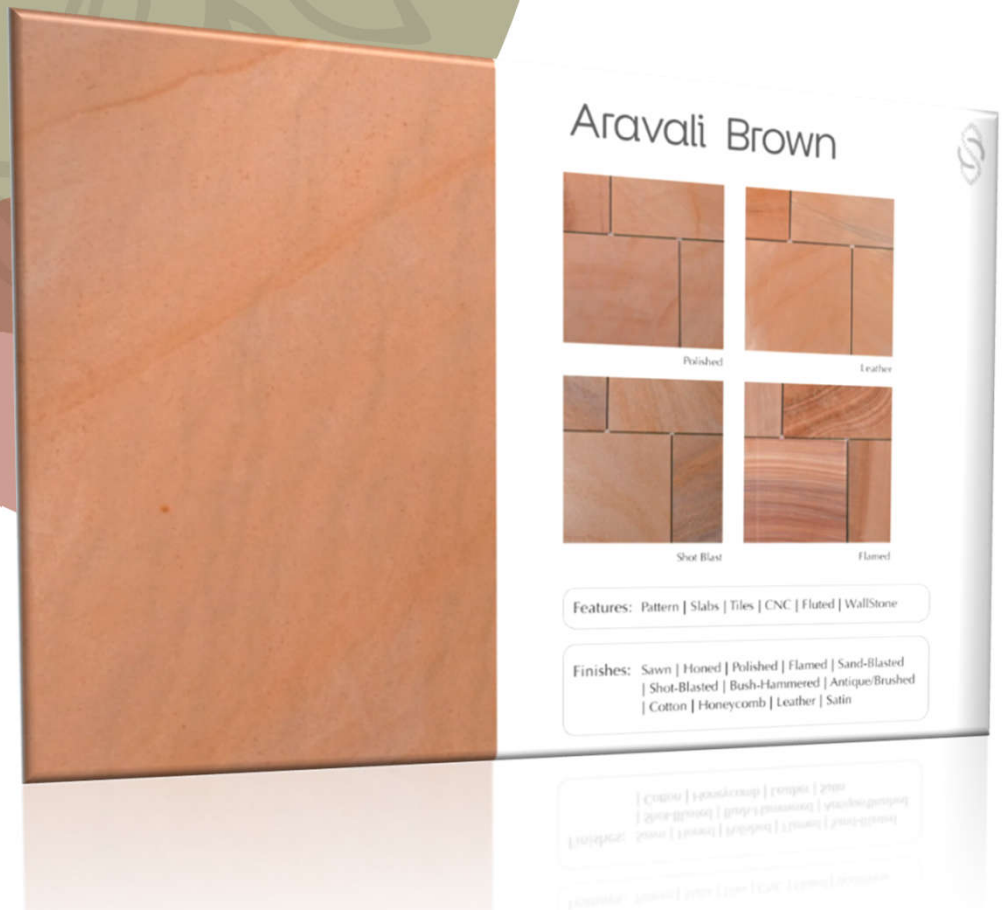

Pencil Line
Leather
Features: Pattern | Slabs | Tiles | CNC | Fluted | WallStone
Finishes: Sawn | Honed | Polished | Flamed | Sand-Blasted | Shot-Blasted | Bush-Hammered | Antique/Brushed | Cotton | Honeycomb | Leather | Satin

Charcole Grey
Polished
Leather
Shot Blast
Flamed
Features: Pattern | Slabs | Tiles | CNC | Fluted | WallStone
Finishes: Sawn | Honed | Polished | Flamed | Sand-Blasted | Shot-Blasted | Bush-Hammered | Antique/Brushed | Cotton | Honeycomb | Leather | Satin

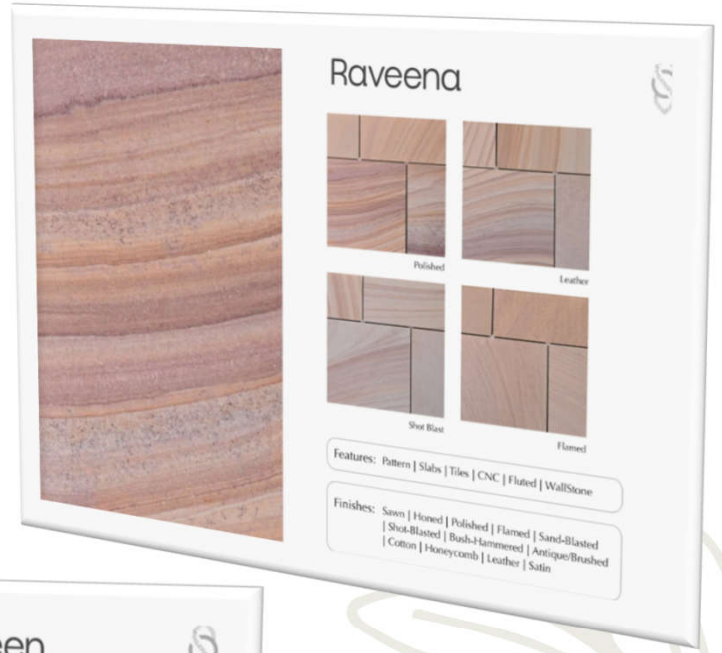
Raveena
Polished
Leather
Shot Blast
Flamed
Features: Pattern | Slabs | Tiles | CNC | Fluted | WallStone
Finishes: Sawn | Honed | Polished | Flamed | Sand-Blasted | Shot-Blasted | Bush-Hammered | Antique/Brushed | Cotton | Honeycomb | Leather | Satin

Beige Green
Polished
Leather
Shot Blast
Flamed
Features: Pattern | Slabs | Tiles | CNC | Fluted | WallStone
Finishes: Sawn | Honed | Polished | Flamed | Sand-Blasted | Shot-Blasted | Bush-Hammered | Antique/Brushed | Cotton | Honeycomb | Leather | Satin

Buff

Cobbles | Circle | Flag Stone | Tiles | Stepping Stone | Jumbo Slabs

Finishes: Riven(Natural-Split) | Rockface | Brushed | Shot-Blasted
Sizes : 90x60 Series, 84x56 Series, Customization Available

Autumn Brown

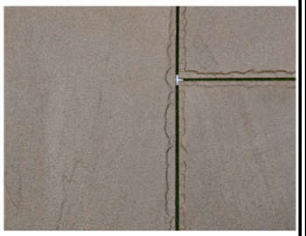

Cobbles | Circle | Flag Stone | Tiles | Stepping Stone | Jumbo Slabs

Finishes: Riven(Natural-Split) | Rockface | Brushed | Shot-Blasted
Sizes : 90x60 Series, 84x56 Series, Customization Available

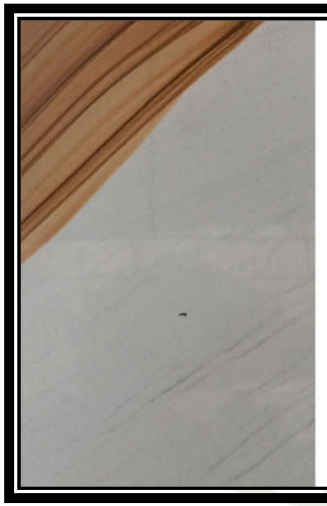

Two Tone

Polished

Leather

Shot Blast

Flamed

Features: Pattern | Slabs | Tiles | CNC | Fluted | WallStone

Finishes: Sawn | Honed | Polished | Flamed | Sand-Blasted | Shot-Blasted | Bush-Hammered | Antique/Brushed | Cotton | Honeycomb | Leather | Satin

Raj Green

Cobbles | Circle | Flag Stone | Tiles | Stepping Stone | Jumbo Slabs

Finishes: Riven(Natural-Split) | Rockface | Brushed | Shot-Blasted
Sizes : 90x60 Series, 84x56 Series, Customization Available

Kandla Grey

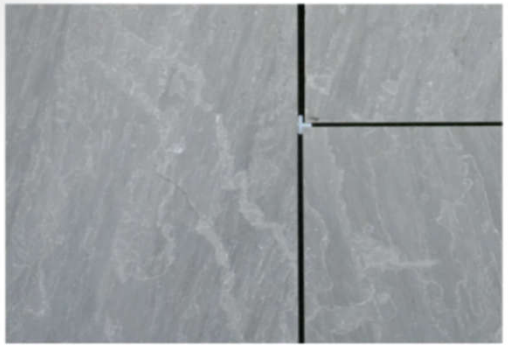

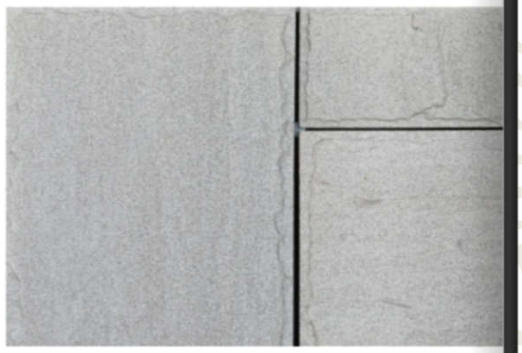

Cobbles | Circle | Flag Stone | Tiles | Stepping Stone | Jumbo Slabs

Finishes: Riven(Natural-Split) | Rockface | Brushed | Shot-Blasted
Sizes : 90x60 Series, 84x56 Series, Customization Available

एक जिला एक खेल

कबड्डी

कबड्डी प्राचीन भारतीय खेल है। महाभारत जैसे ग्रंथों में इसका उल्लेख पाया जाता है जो लगभग 4000 वर्ष पुराना है। यह भारतीय खेल विभिन्न राज्यों में अलग-अलग नाम से जाना जाता था जैसे कबड्डी को आंध्रप्रदेश और तेलंगणा में चेडुगुडू, महाराष्ट्र, कर्नाटक, और केरल में कबड्डी, पश्चिम बंगाल और बांगलादेश मे कबडी किं वाहा-डु-डू, मालदीव में भाविक, पंजाब में कौड्डी या कबड्डी, पश्चिम भारत में हुतूतू, पूर्व भारत में हुदूदू, दक्षिण भारत में चडकुडू, नेपाळ में कपर्डी, और तामिळनाडू में कबडी किंवासादुगुडू जैसे नामों से जाना जाता है।

कबड्डी खेल के उद्देश्य

- कबड्डी का खेल शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह खेल खिलाडियों की ताकत, सहनशक्ति, चुस्ती और फुर्ती को बढाने में सहायक है। साथ ही इस खेल से मानसिक दक्षता बढती है और तेजी से निर्णय लेने, रणनीति बनाने और त्वरित प्रतिक्रिया देने की क्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही खिलाडियों को आत्मनिर्भर और निडर बनाने में भी मदद करता है।
- यह खेल शारीरिक व्यायाम का एक बेहतरीन साधन है, जो शरीर को सक्रिय और स्वस्थ रखता है। साथ ही इससे सामूहिक भावना को बढावा मिलता है और टीम वर्क को मजबूती मिलती है।
- कबड्डी खेल रक्षा और आक्रमण की रणनीतियों को सिखने का अवसर देता है और इसका भारतीय संस्कृति और ग्रामीण खेल परम्परा को बनाए रखने में भी योगदान है। यह एक मनोरंजक खेल के साथ ही व्यक्तित्व और सामूहिक भावना के विकास में भी सहायक है।
- बूंदी जिले में पंच गौरव के तहत कबड्डी के खेल को शामिल करने का निर्णय एक उत्कृष्ट कदम है, जो जिले के खिलाड़ियों को व्यापक प्रोत्साहन और उचित मंच प्रदान करेगा। यह निर्णय न केवल कबड्डी के खेल को बढ़ावा देगा, बल्कि जिले के युवाओं को भी खेल के प्रति प्रेरित करेगा।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा: खिलाड़ियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे अपने खेल को विश्व स्तर पर प्रदर्शित कर सकेंगे।
- सीनियर नेशनल महिला पुरुष में राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता खिलाड़ियों को राज्य सरकार आउट ऑफ टर्म पॉलिसी के अंतर्गत सरकारी सेवाओं में रोजगार के अवसर प्रदान करती है।

जिले में खेल के लिए किए गए प्रयास

- जिला मुख्यालय पर खेल संकुल स्थित स्टेडियम में इंडौर हॉल निर्माणाधीन है। इसके अतिरिक्त प्रतिभावान खिलाड़ियों को आवास, भोजन, चिकित्सा, खेल मैदान एवं प्रशिक्षक की उच्चस्तरीय सुविधाएं मिल सके इसके लिए प्रयास शुरू किए गए है, ताकि बूंदी कबड्डी खेल में विश्व स्तर पर अपने आपको स्थापित कर सके।
- **उपलब्ध सुविधाएं** आउटडोर कबड्डी मैदान तैयार, ओपन-जिम , ट्रैक 400 मी., वॉकिंग लेग ट्रैक 1500 मीटर।
- जिले में कबड्डी विकास के लिए कई तरह के प्रयास किए जा रहे है। भारत सरकार की खेलो इंडिया योजना में कबड्डी के खेल को शामिल किया गया है।
- विवो व अन्य ब्रांड कबड्डी प्रतियोगिताओं को स्पोंसर कर रहे हैं, जिससे कबड्डी का व्यावसायिक रूप से भी विकास हो रहा है।
- बूंदी में भी कबड्डी को व्यावसायिक रूप में विकसित करने के लिए डीकेएल और एनकेएल कबड्डी लीग आयोजित करवाई जाती है।
-

एक जिला एक पर्यटन स्थल - रामगढ विषधारी टाइगर रिजर्व

रामगढ विषधारी टाईगर बाघ क्षेत्र बून्दी, देश का 52 वां व राज्य का चौथा टाईगर रिजर्व है। इस टाईगर रिजर्व की घोषणा सरकार द्वारा 22 मई 2022 को की गई थी। यह बाघ संरक्षण क्षेत्र राज्य के कोटा बून्दी और भीलवाडा में फैला हुआ है। इसका अधिकतर भौगोलिक क्षेत्र बून्दी जिले में आता है। इस संरक्षण क्षेत्र का महत्व उत्तर पूर्व में रणथम्भौर बाघ संरक्षण क्षेत्र सवाईमाधोपुर एवं दक्षिण में मुकुन्दरा टाईगर रिजर्व, कोटा को जोडता है, इसके फलस्वरूप् रणथम्भौर के अधिशेष वन्यजीव प्रमुखतयाः बाघ के लिए एक कोरिडोर की तरह कार्य करता है। जिससे की अधिशेष वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास को और बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राज्य के ऐतिहासिक जिले बून्दी में सरकार द्वारा बाघ संरक्षण क्षेत्र की घोषणा से पर्यटन को और अधिक विकसित होने की संभावना है। इसके साथ-साथ रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में कैरिंग कैपीसिटी से अधिक वन्यजीव (बाघ, बघेरा, भालू आदि) की स्थिति में यह टाईगर रिजर्व इन अधिशेष वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करता है।

आर.वी.टी.आर. के वन क्षेत्रों में तीन स्थानीय नदियों मेज, तर्जनी,माछली का अविरल प्रवाह वर्षभर रहता है। यह नदियां पर्यटको के आकर्षण का प्रमुख बिन्दु है, पर्यटकों को लुभाने के अतिरिक्त यह सीमावृती कृषकों को सिंचाई के लिए समुचित मात्रा में पानी उपलब्ध करवाता है जिससे कि कृषि पैदावार अच्छी होती है। यह टाईगर रिजर्व लगभग 1500 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

विन्ध्या पर्वतमाला के ऊपरी भाग में धौंक, सालर, गुरजन, खिरनी, कडाया, गोयाखेर, तेंन्दु, विषतेन्दु आदि वनस्पतियां पाई जाती है तथा पहाडों की तलहटी में बबूल, खैर, खजूर, बांस, विलायती बबूल आदि वनस्पतियां पाई जाती है। यह वनस्पतियां बारिश के पानी को रोककर भूमिगत जल स्तर को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह टाईगर रिजर्व स्थानीय युवकों को विभिन्न तरह से रोजगार उपलब्ध कराता है। वन एवं वन्यजीव की सुरक्षा हेतु 80 होमगार्ड के जवान, 19 सिविल डिफेन्स के वॉलियन्टरस तथा लगभग 100 ग्रामीण स्वयं सेवको को रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

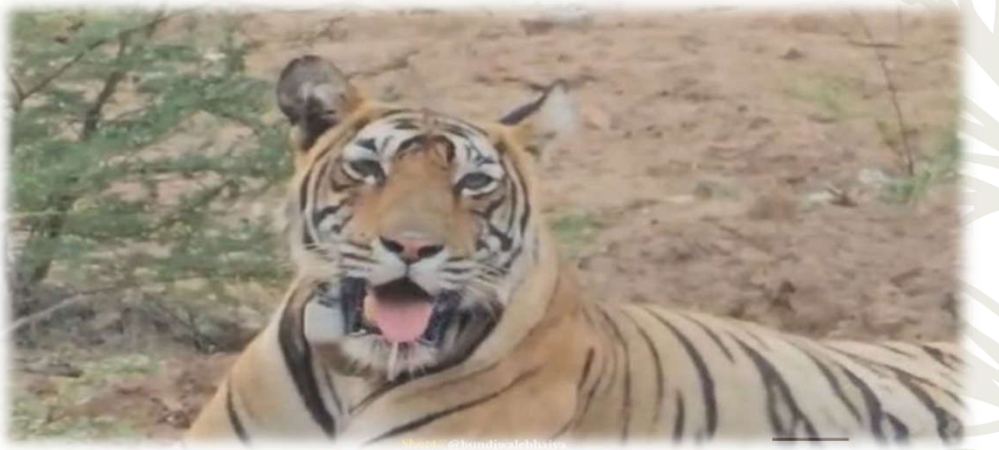

रामगढ विषधारी बाघ क्षेत्र

बाघ क्षेत्र का अधिकांश भाग विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला का भाग है। इसके अन्दरूनी हिस्से में कही-कही अरावली पर्वत श्रृंखला के प्रमाण भी मौजूद है। जिसके फलस्वरूप यहां प्राकृतिक तौर पर अरावली पर्वत श्रृंखला एवं विध्याचल पर्वत श्रृंखला में पाये जाने वाले वन, वन्यजीव एवं वनस्पतियां पाई जाती है। बाघ, बघेरा, भालू, हिरण, भेडिया, जंगली सूअर, सांभर, मोर, घडियाल, हायना आदि के स्वछंद विचरण के कारण इस बाघ क्षेत्र के बफर एरिया में दिनांक 23 जून 2023 सफारी जोन शुरू की गई है। इस बाघ संरक्षण क्षेत्र के कोर एरिया में पर्यटन जोन खोलने के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाये गये है।

जैतसागर में नौकायान

जैतसागर झील बून्दी शहर का एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। पर्यटन के विकास के दृष्टिगत इस झील से कमल के पौधो को बाहर निकालकर झील को विकसित किया जा रहा है। विगत 20 जनवरी 2024 को जैतसागर झील में सरकार की पूर्वानुमति से नौकायान प्रारम्भ किया गया है। पर्यटको की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ नावों की संख्या में बढोतरी किया जाना प्रस्तावित है। पर्यटको की सुविधा के लिए टिकट विण्डों, टॉयलेट, रेस्टिंग शेड, नाव की पार्किंग हेतु जेटी आदि का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है।

इन्टरप्रेटेशन सेन्टर

स्थानीय स्कूल व कॉलेज के छात्र-छात्राओं, आमजनता एवं पर्यटको को बून्दी जिले के वन, वन्यजीव, औषधि पौधों की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए एक इन्टप्रेटेशन सेन्टर की स्थापना किया जाना प्रस्तावित है। इस इन्टरप्रेटेशन सेन्टर में वन, वन्यजीव आदि के वीडियो शो भी आयोजित किए जाएंगे।

नेचर ट्रेल

मानधाता मन्दिर से टाईगर हिल के लिए एक नेचर ट्रैल, जिसकी लम्बाई लगभग 10 कि0मी0 है, जिसके विकास के लिए कार्य प्रगतिरत है। इस ट्रेल पर पाये जाने वाले पेड़, पौधे, भूगर्भी पत्थर वन्यजीव, औषधी पौधों को पहचान कर उस पर उनके वैज्ञानिक एवं स्थानीय नामों का वर्णन किया जाना प्रस्तावित है।

वन व वन्यजीव से संबंधित विज्ञापन कार्य-

रामगढ विषधारी बाघ क्षेत्र में प्रारम्भ किये गये टाईगर सफारी, नौकायान, इन्टरप्रेटेशन सेन्टर, नेचरट्रेल आदि जैसे उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं का विज्ञापन प्रिन्ट व डिजिटल मिडिया के माध्यम से किया जाना प्रस्तावित है। इसके साथ-साथ सुलभ जानकारी के लिए ब्रोशर का प्रिन्ट करवाना भी प्रस्तावित है। रामगढ विषधारी टाईगर रिजर्व, बून्दी के प्रचार-प्रसार के लिए एक वीडियो फिल्म भी बनाई गई है, जिसमें कोर वन क्षेत्रो में उपलब्ध वन्यजीव, नदी-नाले इत्यादि को दिखाया गया है, जिससे पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकें।

रामगढ विषधारी

मयूर एवं बाघ

एक जिला एक वनस्पति: धोंक

धोंक, धोकडा और करधाई के नाम से भी जाना जाता हैं। यह एक धीमी गति से बढने वाला मध्यम आकार का पेड हैं। इसकी ऊंचाई 9 से 11 मीटर तक होती हैं। धोक के पेड अरावली के वस्त्र की तरह मौसम के अनुसार रंग बदलते है। सर्दियों में इसकी पत्तियां हल्के लाल (तांबे के जैसे) गर्मियों में यह सूखकर धूसर तथा बारिश में पत्ते हरे-भरे हो जाते हैं। इसकी लकडी कठोर/सख्त होती हैं, इसे दुनिया की सबसे मजबूत लकडियों में गिना जाता हैं (IJCS Jan 2018) इसकी शाखाएं झुकी हुई (पेंडुलम की भांति) लटकती हैं।

धोंक की पत्तिया मुलायम और छोटे आकार की होती हैं। इसकी पत्तिया सर्दियों में भूरी लाल होती है जिससे धोक के वृक्ष सर्दियों में सूखे एवं मुरझाये हुए दिखते है। बसंत के आने पर इसकी पत्तियां हरी एवं चमकदार हो जाती है जिससे यह धोक के वृक्ष बसंत में सुन्दर एवं चमकदार दिखाई देते है। इस पर बहुत छोटे आकार के फूल अगस्त-सितम्बर महीने में आते हैं तथा लगभग गोलाकार और चपटी फलियॉ नवम्बर में आती हैं। चपटी गोलाकार फलियों के कारण इसे बटन ट्री भी कहा जाता है।

धोंक का तना शुरूआत में चिकना एवं सिल्वरी होता है लेकिन धीरे-धीरे खुरदरा एवं स्लेटी होता जाता है, साथ ही पूराने वृक्षों के तने पर गहरे धब्बे पडने लग जाते है। धोंक में पतझड का समय दिसम्बर से मार्च होता है। धोक के बीजो की जीवन क्षमता बहुत कम (0.1 प्रतिशत) होने के कारण बीजो द्वारा प्राकृतिक पुनर्जनन अत्यंत कठिन हैं। इस कारण इस प्रजाति को वानस्पतिक प्रोपेगेशन के तरीके से उगाना महत्वपूर्ण हैं। धोंक के बीज की शक्यता एक वर्ष से अधिक होती है। इसके सूखे बीजो की संख्या 1 से 2 लाख बीज प्रति कि.ग्रा. तक होती है। बुवाई के बाद बीज 10-15 दिन में उगते हैं।

बंसत ऋतु तथा शरद ऋतु में धोंक वृक्ष

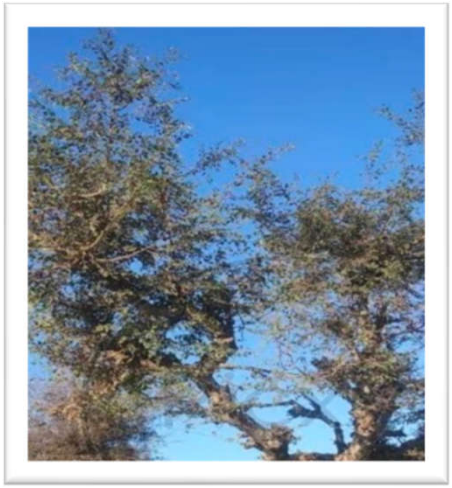

धोंक के बीज

धोंक वृक्ष का क्षेत्र विस्तार

धोंक अरावली के पहाडी क्षेत्र में पायी जाने वाली प्रमुख प्रजाति है। अरावली पर्वत श्रृंखला का 80 प्रतिशत वन क्षेत्र में धोक पाया जाता हैं। राजस्थान में धोक के वृक्ष अलवर, जयपुर, अजमेर, बाडमेर, भीलवाडा, कोटा, बून्दी, सिरोही आदि क्षेत्रो में बहुतायत में मिलते है।

धोक की पारिस्थितिकी

इस प्रजाति को अरावली की क्लाईमेक्स प्रजाति के रूप में जाना जाता हैं। अरावली के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की सबसे महत्वपूर्ण प्रजाति है। धोंक के पेड सूखे के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। यह चट्टानी इलाकों जहा मृदा गहराई एवं पानी की उपलब्धता कम है, वहां भी आसानी से जीवित रह पाते है। यह मुश्किल से मुश्किल प्राकृतिक परिस्तिथियों में जीवित रह सकते है। इसी कारण से धोंक अरावली की पहाडियों में बहुतायत पाए जाते है। यह उन कुछ प्रजातियों में से एक है जो अरावली की तीव्र ढाल में उगने हेतु अनुकूल है। यह अरावली में गुच्छों अथवा समुह में पाये जाते है। धोंक पर्णपाती या अर्द्ध सदाबहार जंगल में पाया जाने वाला सागौन के जंगलों और बांस के जंगलों का सामान्य पेड हैं। धोंक के वन अरावली की विशेष मिट्टी, ढाल, भू-आकृति की वजह से वनस्पति अनुक्रमण के चरम पर है।

धोक का महत्व और उपयोग

आदिवासी और ग्रामीण अंचल के लोग पेचिश जैसी बीमारियों तथा इसके एंटी आक्सीडेन्ट गुणों के कारण कई औषधीय उपयोग में लेते हैं। धोंक से ग्रामीणों को चारा, ईधन तथा अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। इसकी लकडी मजबूत होने के कारण इससे फर्नीचर, दरवाजे, खिडकियां, कृषि उपकरण इत्यादि बनाए जाते हैं। इसकी जलाऊ लकडी का ऊष्मीय मान अधिक होने के कारण अन्य लकडियों से ज्यादा कीमत पर बेची जाती हैं। यह वृक्ष अरावली के असंख्य जानवरों को चारा और आवास प्रदान करता है। विशेषकर बकरियों को धोक की पत्तियां बहुत पसंद होती है। धोंक के वनों के पास ग्रामीण द्वारा बकरी पालन कृषि के सहायक धंधे के रूप में प्रसिद्ध हैं।

पर्यावरण संरक्षण

- वायु प्रदुषण को कम करने में मदद करता है।
- इस पेड की जड़े मिट्टी को स्थिर रखने एवं मृदा कटान को कम करने में मदद करती है।
- जल संचय में मदद करती है।
- ग्रीन कवर के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद।

आर्थिक महत्व

- फर्नीचर, दरवाजे, खिडकिया एवं कृषि उपकरण इत्यादि में उपयोग।
- बकरी पालन में सहायक-अरावली की पहाडियों में प्राकृतिक धोंक वनों के निकट गांवों में बकरी पालन व अन्य पशुपालन में समृद्धि।

पौध तैयारी

- बजट घोषणा वर्ष 2024-25 अन्तर्गत One District One Species के तहत 8 नर्सरियों में वितरण एवं वृक्षारोपण लक्ष्य का लगभग 5 से 10 प्रतिशत प्रमुख प्रजाति धोक एवं सह प्रजाति बेर, खिरनी, कुमठा के पौधे तैयार करवाये जा रहे है।

वृक्षारोपण

- वर्ष 2025-26 में कुल 1200 हैक्टयर वनभूमि पर करवाये जाने वाले वृक्षारोपण में उपयुक्त स्थलों पर धोक एवं सह प्रजातियों बेर, खिरनी, कुमठा के अनुकूल वन भूमि पर वृक्षारोपण किया गया है।
- जिला प्रशासन द्वारा आयोजित वन महोत्सव व अन्य प्रमुख दिवसों पर वृक्षारोपण हेतु आमजन एवं सरकारी संस्थाओं/गैर सरकारी संस्थाओं को वितरण किए गए हैं।

चट्टानी भूमि में प्राकृतिक धोक